लेखिका-परिचय :

नाम : डॉ० सम्पत्ति अर्याणी

जनम : 31 मार्च, 1925

जनम-अस्थान : मच्छरहट्टा, पटना सिटी

सिच्छा : एम० ए० (हिन्दी आउ पालि) डिप० इन० एड०, डी० लिट्

पेसा : पटना विस्वविद्यालय के अन्तर्गत विज्ञान महाविद्यालय, पटना में प्राध्यापक पद से सेवा निवृत

निवास : किरण कुंज, रोड नं०-3, राजेन्द्र नगर, पटना-16

परकासित पुस्तक :

1. मगही निबन्ध सौरभ, 2. मगही भासा आउ साहित्य, 3. मगही बेआकरन कोस, 4. मगही लोक साहित, 5. हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास, भाग-16 के मगही लोक साहित्य खंड के सहलेखिका, 6. मगही बेआकरन आउ रचना 7. मगही बेआकरन चन्द्रिका 8. मगही रचना चन्द्रिका, 9. मगही बेआकरन प्रबोध।

पाठ-परिचय :

बिहार के संस्कीरती से सब्भे बिहारी लोग परिचित हथ, बाकि ओकरा बारे में विस्तार से जानकारी न हे। आखिर संस्कीरती के माने का होवऽ हे? ई सवाल के जवाब जानेला हरेक अदमी उत्सुक रहऽ हे। एही सवाल के जवाब देवे के कोसिस कैलन हे डॉ० सम्पत्ति अर्याणी।

बिहारी संस्कीरती के पहचान

बिहार के संस्कीरती कै गो संस्कीरती के संगम हे। ई सब्भे संस्कीरती अपने-आप में ऐतिहासिक, समाजिक, संस्कीरतिक आदि दृस्टि से समृद्ध हे,

सुविकसित हे, स्वतंत्र हे; बाकि बिहार के संदर्भ में, सब्भे मिल के एक्के संस्कीरती के उद्घोस करऽ हे—ऊ हे 'बिहारी संस्कीरती। एकर इलाका भी जादे फैलल हे। एकर उत्तरी सीमा पर नेपाल आउ हिमालय पर्वत अधिस्ठित हे, दक्खिनी सीमा पर झारखंड राज्य प्रतिस्ठित हे, पूर्वी सीमा पर पच्छिम बंगाल हे आउ पच्छिमी सीमा पर उत्तरप्रदेश के राज्य वर्तमान हे। ई सीमा-क्षेत्र के अन्तर्गत बिहारी संस्कीरती 'अनेकता में एकता' के दृस्य उपस्थित करऽ हे। कहीं महाकवि विद्यापति के सुललित गीत के गायन मिथिला के गौरव दरसावऽ हे, कहीं बाबू कुंअर सिंह के गौरव-गाथा भोजपुर के सौर्य के कथा सुनावऽ हे, कहीं लोरिक के गौरव-कथा मगध के भाव-भरल संस्कीरती दरसावऽ हे।

कोई मिथिला के बिसेसता बतावइत ई गीत सुना जा हे :

'कोकटी धोती पटुआ साग
तिरहुत गीत बड़े अनुराग।
भाव भरल तन तरुणी रूप
एतवै तिरहुत होइछ अनूप।'

—अर्थात्, कोकटी धोती, पटुआ साग, प्रेम में सराबोर तिरहुती गीत, रूपवती तरुणी के भाव-भरल सौन्दर्य मिथिला ला उल्लेखनीय हे।

कोई मागधी संस्कीरती के उद्घोस करइत गंगा के गांभीर्य के बरनन कर जा हे:—

'तांबु भींजे, तांबु डोर भींजे,
मइया भींजे नौ सौ लोग,
गंगा गहरी भरी।
जगतारनी लहर नेवार,
गंगा गहरी भरी।'

पाटलिपुत्र के तट पर बहे वाली गंगा के केतना भाव-भरल वन्दना हे!

जद्पि बिहार के अलग-अलग छेत्तर के ई सब अभिव्यंजना हे, तथापि सब मिल के बिहार के संस्कीरती के ही ई सब उद्घोस करऽ हे। कहीं-कहीं एक्के भाव के अभिव्यंजक पंक्ति बिहार के भिन्न-भिन्न इलाका में सुनाई पड़ऽ हे। यथा प्रिया के वियोग में विह्वल एगो मगध के नायिका कहऽ हे :

'जे हम जनती पिया, जैवऽ हे बिदेसवा
बाँधती हम रेसम के डोर ।
रेसम बन्धन्वा पियवा टुटिए-फटिए जयतइ,
बाँधती हम अँचरा के कोर ।।'

'हे प्रिय! जे हम जनती कि तूँ विदेस चल जैबऽ, तो तोरा रेसम के डोर में बाँध रखती। बाकि रेसम के डोर भी तो टूटिए जाय वाला हे; हम तोरा अप्पन प्रेमांचल मे बाँध रखती।

केतना कोमल भावना के अभिव्यक्ति हे!

एही भाव के एगो मैथिल नायिका अइसे व्यंजित करऽ हे।

'एहो हम जनितौं पिया, जइथिन परदेसवा,
बाँधितौं मैं रेसमक डोर ।
रेसम बंधनमा टुटिए-फाटि जयतइ,
बाँधितौं मैं अँचरा लगाय ।।'

भोजपुरी-सैली कुछ अलगे ही हे। ई छेत्तर के नायिका के व्यंजना हे:—

'जहु हम जनितें ए लोभिया, जइबे तुहूँ मोरंगवा,
घींची बाँही बन्हितो ए लोभिया, रेसम के रे डोरिया ।

रेसम के डोरिया, ए लोभिया, टुटि-फाटि जइहें, वचन के बान्हल पियवा, कतहीं न राम जइहें।।'

अलग-अलग छेत्तर के अलग-अलग भासा हे, अतः उनका में भासा-भेद देखाई पड़ऽ हे। बाकि एक्के बिहारी संस्कीरती में आबद्ध होवे के कारन उनका मे भावाभिव्यंजन के एक्के परनाली हे, एक्के कथानक आउ कथारूढ़ि हे। इनका बीच वर्तमान भेद इनका अप्पन पहचान दे हे। एगो आउ उदाहरन लीं :

पटना आउ भोजपुर जिला के सन्धि-सीमा सोन नदी-तट के कोइलवर टीसन के पास जईं। एक्के लम्बा पुल से दुन्नो तट जुड़ल हे। हिआँ निरंतर आवागमन भी होवऽ हे। बाकि पुल के भोजपुर वला किनारा पर सुद्ध भोजपुरी आउ ओकर संस्कीरती बिराजमान हे, पटनिया किनारा पर सुद्ध मगही अप्पन संस्कीरतो के सारा

बिसेसता के साथ वर्तमान हे। हिआँ तक कि ई पार तक निरन्तर नाव खेवे वाला धीवर भी अप्पन भासा बोलऽ हे। अगर ऊ पटना जिला के हे, तो मगही बोलऽ हे आउ भोजपुर के हे तो भोजपुरी बोलऽ हे। एक्के जल-बिरीछ पर इनकर आगमन-प्रगमन भी इनका से इनकर भासा अलग न करे। एही छेतरीय बिसेसता इनका छेतर-बिसेस के घोसित करऽ हे, इनकर अप्पन पहचान बतावऽ हे। परन्तु जब 'बिहारी संस्कीरती' के प्रस्न आवऽ हे, तो दुन्नो में अनेक साम्य के तत्त्व निकल आवऽ हे। दुन्नो में एक्के पृस्ठभूमि देखाई पड़ऽ हे, एक्के पारिवारिक, समाजिक आउ धार्मिक परिवेस। धरम, व्यवहार, आचार, आदर्स, चिन्तन, रीति-रिवाज आदि में अद्‌भुत एकरूपता देखाई पड़ऽ हे। सबके प्राकृतिक बातावरन एक्के देखाई पड़ऽ हे; रितुचक्र भी सबके समाने लगऽ हे।

'बिहारी संस्कीरती' के निर्मान में बिहार के पाँच अंचल के योगदान हे। ई हे—मगध, भोजपुर, मिथिला, अंग आउ वैशाली। ई अंचल के अप्पन-अप्पन इलाकाई भासा हे, जे क्रमसः ई तरह हे—मगही, भोजपुरी, मैथिली, अंगिका आउ बज्जिका।

बिहार के ई सब्भे अंचल के अप्पन छेत्तर, अप्पन साहित आउ अप्पन संस्कीरती हे। ई छेत्तर के निवासी अप्पन भासा-संस्कीरती पर गरब करऽ हथ। जदि कोई अंचल के जन सबल होलन, तो ऊ अप्पन अंचल के छेत्तर आउ साहित के समेटेला चाहऽ हथ। तो एकरा ला स्व-अंचल में भारी बिरोध पैदा होवऽ हे, संघर्स हो जा हे, प्रतिवाद कैल जाहे। अप्पन छेत्तर, साहित आउ संस्कीरती के सुरच्छा ला जतन कैल जा हे। एही निजता छेत्तर-बिसेस के जाग्रत अस्तित्व के परमान हे। बाकि बिहार आउ बिहारी संस्कीरती के संदर्भ में सब्भे अंचल एक हो जा हे, एक बिहार के झंडा के नीचे एकत्व-बोध के संग खड़ा हो जा हे। ई भिन्नता आउ फिन एकता के दृस्य अद्‌भुत होवऽ हे।

बिहार के अलग-अलग अंचल के पहचान ला उनकर संच्छिप्त झाँकी देवल जा रहल हे। सबसे पहिले मगध के लीं :

मगही :

मगध के इलाका अति फैलल हे। पटना गया, शेखपुरा, लक्खीसराय, जमुई, नालंदा, जहानाबाद, औरंगाबाद, अरवल, नवादा आदि छेत्तर में मागधी संस्कीरती

फैलल हे। हिआँ के भासा मगही हे। मगध के ऐतिहासिक परम्परा अति सुदृढ़ हे। ई, ग्यान–विग्यान, धर्म–दर्सन, सक्ति–सम्पन्नता आउ साहित–संस्कीरती के छेत्तर में जे अनुपम देन देलक हे विस्व–इतिहास में दुर्लभ हे। प्रियदर्सी समराट् अशोक जे विस्व–संस्कीरती के अद्वितीय भेंट देलन, ओकर फलस्वरूप मगध अगला हजारो बरिस तक संसार के सांस्कृतिक–धार्मिक परेरना के केन्द्र बनल रहल। ग्यान–विग्यान के जे असीम रत्नाकर नालंदा में लहरायल, ओकरा में अवगाहन करके विस्व धन्य भेल। कहे के आवस्यकता न हे कि सिच्छा–संस्कीरती, कला–कौसल, वानिज्य–बेयोपार, आउ देस–विदेस से संपर्क आदि–सब्भे छेत्तर में मगध के नाम भारत के इतिहास में सवर्नाच्छिर में अंकित हे।

मगध के भासा 'मगही' पुरातन मागधी भासा के आधुनिक रूप हे। मगही अप्पन जलमकाल से ही अप्पन भासाई छमता के साथ विराट मगध–छेत्तर के जनमानस में प्रतिस्ठित हे आउ सबके अभिव्यक्ति के माध्यम हे। ओकरा में जुग–जुग से लोकाभिव्यक्ति होइत आयल हे। फलत:, ओकर भासाई छमता बढ़इत गेल हे। ओकर साहित तो एतना सुविस्तृत आउ समृद्ध हे कि जेकर सीमा न बाँधल जा सके।

भोजपुरी :

बिहार के बोली सब में भोजपुरी बिहार के भोजपुर, रोहतास, बक्सर, छपरा, चम्पारन आदि छेत्तर में बोलल जा हे।

साहित आउ संस्कीरती दुन्नो दृस्टि से भोजपुर–इलाका समृद्ध हे। ई भासा के बोले वाला लोग अप्पन वीरता आउ उत्साही परकीरती ला प्रसिद्ध हथ। स्वतंत्रता के नाम पर मर मिटे वाला अप्पन सपूत के वीरगाथा से भोजपुर–इलाका गौरवान्वित हे।

मैथिली :

मगही के उत्तरी सीमा पर गंगा के ऊ पार दरभंगा, समस्तीपुर, मधुबनी में अप्पन समृद्ध परम्परा के साथ मैथिली बोलल जा हे।

मिथिला के जन–जीवन आरंभ से ही उल्लासमय रहल हे। सौभाग्य से एकरा राजाश्रय भी प्राप्त रहल हे। रास्ट्र–विप्लव के जे चोट आउ विदेसी आक्रमन के जे आघात मगध के सहे पड़ल, ओकरा से मिथिला–छेत्तर अपरिचित ही रहल। देस के

सुदूर पूर्वोत्तर कोना में पड़े के कारन आउ पच्छिम में गंडक आउ दक्खिन में गंगा नदी से एकरा सदा बचाव रहल। देस के बड़ा–से–बड़ा राजनीतिक उथल–पुथल भी एकरा पर कुछ असर न डाललक। एकरा चलते हिआँ के निवासी संतोस आउ सान्ति से अप्पन साहित आउ संस्कीरती के समुन्नत करइत रहलन। हिआँ के साहित माधुर्य–गुन से सम्पन्न हे। राजस्थानी इया भोजपुरी–साहित में जे ओज के स्वर मिलऽ हे, ओकर हिआँ अभाव हे। शिव आउ सक्ति के प्रति मिथिला में अगाध भक्ति देखाई पड़ऽ हे।

हिआँ के प्रिय भोजन हे—चूड़ा-दही, माछ–भात, अँकुरी–मखाना।

अंगिका :

प्राचीन अंग देस (आज के भागलपुर आउ ओकर निकटवर्ती इलाका) के भासा अंगिका हे। ऐतिहासिक, साहित्यक आउर सांस्कृतिक दृस्टि से ई छेत्तर पर्याप्त सुदृढ़ आउ समृद्ध रहल हे। अजगैबी नाथ महादेव के मन्दिर स्थित होवे से ई अंचल के धार्मिक महत्व भी हो गेल हे।

बज्जिका :

प्राचीन काल में वृज्जि–संघ (आधुनिक मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, वैशाली आउ ओकर निकटवर्ती क्षेत्र) अति विख्यात हल। एही इलाका के भासा के नाम बज्जिका हे। एकरा वैशाली बोली के नाम से भी स्मरन कैल जा हे। ऐतिहासिक आउ सांस्कृतिक दृस्टि से एकर सम्पनता केकरो से कम न हे। वैशाली–छेत्तर जैनी आउ बौद्ध लोग के तीर्थस्थल भी हे।

ई तरह से बिहार अप्पन पाँच अंचल के ले के बिहार हे। ई सबके गरिमा बिहार के गरिमा हे, इनकर सउँसे परम्परा बिहार के परम्परा हे।

जदि बिहार के संस्कीरती के अलग–अलग अथवा समन्वित अध्ययन करना हे, तो ई अंचल के साहित के देखे पड़त। बिहार के विस्तृत जन–जीवन के अध्ययन ला ई एगो संवेदनसील दर्पन के काम करऽ हे। एकरा में ओकर समस्त लोकाचार, संस्कार, रूढ़ि, परम्परा, परवीरती, भावना आउ सुख–दुख प्रतिबिम्बित हे। बिहार के जन–मानस में जुग–जुगान्तर से जे भी वैयक्तिक इया सामाजिक उद्‌गार निस्सृत भेल हे, ऊ सब्भे ओकर साहित में संचित हे।

एही साहित के माध्यम से बिहारी संस्कीरती पहचानल जायत। हम अप्पन चतुर्दिक जे कार्ज–कलाप दैनिक जीवन में देखइत अयली हे, लोक–साहित्यकार ऊ सारा जीवनानुभव के साहित में संचित करइत आयल हे। लोक–साहित में लोक-जीवन के बड़हन व्याख्या मिलऽ हे। ई लोक में बिराट के भाव सन्निहित होवऽ हे। 'लोक' पद बिराट समाज के तरफ इंगित करऽ हे। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त के 10/90 मंत्र में कहल गेल हे:—

'सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्'

अर्थात् 'ऊ (लोक) बिराट पुरुस हे, जेकरा हजार सिर, हजार आँख आउ हजार चरन हे। अतः 'लोक' पद से अभिप्रेत साधारण जन–समाज ही हे।'

बिहार के साधारन जन–समाज के मूल केन्द्र ग्राम हे। ग्राम के बस्ती सब हम्मर संस्कीरती के थाती हे। हम्मर जन के स्वाभाविक सरलता (बिहारी लोग अप्पन सीधापन ला प्रसिद्ध हथ) आउ निजरुपता ग्राम में सुरच्छित हे। जनपदीय भावना के मूल सूत्र हे :

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'

अर्थात् 'भूमि माता हे आउ हम ओकर पुत्र ही।' भूमि ला ई लगाव ही छेत्तर–विसेस के अदमी के पहचान बनऽ हे। ई निजरूपता नागरिक (सहरी) जीवन में दुर्लभ हे। नागरिक जीवन मिलावट के जीवन हे। व्यापार आउ भौतिक सुख–सुविधा के चलते नगर परदेसी परभाव में जादे आ जा हे। एकरा चलते दूसर संस्कीरती के एतना परभाव हो जा हे कि खान–पान, रहन–सहन, वेस–भूसा, चाल–चलन सब में बदलाव आ जा हे। नगर के चमक–दमक आउ बनावटी आचार–व्यवहीर से छेत्तर विसेस के व्यक्ति के निजरुपता आउ पहचान भी भुतला जा हे। ग्राम में ई बात न हे। हुआँ अप्पन भूमि आउ परम्परा के प्रति अइसन लगाव, अइसन निस्ठा आउ परेम रहऽ हे, जेकरा चलते गाँव के निजरुपता सुरच्छित रह जा हे। आउ ई निजरुपता तबतक बरकरार रहऽ हे जब तक नगर के संस्कीरती, ग्राम के संस्कीरती पर हावी न हो जाए। ग्रामीन संस्कीरती के सुरक्षा ला ही सायद प्रियदर्सी समराट अशोक राजा लोग के 'बिहार–जातरा' के अन्त करके 'धरम–जातरा' के चलन चलैलन होत।

साहित आउर संस्कीरती के निर्मान में एक वर्ग के हाथ न रहे। ओकरा में जोगदान रहऽ हे—हरेक वर्ग, हरेक जाति, धर्म आउ समाज के। व्यवसायी अप्पन ढंग से जोगदान दे हे, मजदूर अप्पन ढंग से, किसान अप्पन ढंग से। धनी वर्ग के एक सैली हे, निर्धन वर्ग के दूसर। हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई आदि सब्भे अप्पन-अप्पन ढंग से जोगदान दे हथ। पुरुस आउर नारी-वर्ग भी अप्पन सिच्छा-दिच्छा, आचरन-संस्कार के हिसाब से संस्कीरती के निर्मान में योगदान दे हे। बिहारी संस्कीरती बिहार के संपूर्ण समाज के संस्कीरती के समस्टि रूप हे। बाकि सब जगह छेतरीय बिसेसता झलकते रहऽ हे। संस्कीरती ई निजरुपता आउ एकता के अद्‌भुत सम्मिलन हे।

हम्मर जनपदीय जीवन हजार-हजार बरिस के अटूट परम्परा से समन्वित हे। बिहार के घर-घर में सालो भर सामाजिक-धार्मिक उत्सव के लहर लहराइत रहऽ हे। एकरा चलते जन-जीवन विपुल उल्लास आउ आनन्द से सराबोर रहऽ हे। फोहवा सिसु के जनम के साथे जीवनोत्सव के सिलसिला सुरू हो जा हे। जैसे-जनमोत्सव, छठिहार, अन्नप्रासन, उपनयन आदि। फिन, विवाह में—छेंका, हल्दी-कलसा, विवाह, विदाई, गौना आदि। फिन सन्तान के जनम, फिन उत्सव, फिन विवाह के सिलसिला आदि। ई चक्र हे, जे अदमी के जीवन से मरन तक चलऽ हे। एही तरह से सालो-भर पर्व-त्योहार के ताँता लगल रहऽ हे। प्रत्येक वर्ग, धरम आउ जाति के लोग अप्पन-अप्पन भासा आउ सैली में जथासक्ति ई उत्सव सब में भाग ले हथ जेकरा चलते जनपदीय साहित आउ संस्कीरती में खूब समृद्धि आ जा हे। बिहार के हर छेत्तर में ई बिसेसता देखाई पड़ऽ हे। बिस्वनियंता कुछ अइसने पहचान बना देलक हे जेकरा से सहजे पता चल जायत कि अमुक बेक्ति बिहार के कौन अंचल के हे, ऊ कौन अंचल के भासा बोलइत हे आउ कौन अंचल के रीति-व्यवहार, परम्परा आउ संस्कीरती के परिचय देइत हे। जइसे दू अदमी के सूरत न मिले, बहुत कुछ समानता होवे पर भी कुछ-न-कुछ अंतर रहबे करऽ हे, एही बात बिहारी संस्कीरती के संबंध में भी सच हे।

ई संदर्भ में कतिपय उदाहरन भी देल जा रहल हे :

हिंदू समाज में बेटा आउ बेटी के समाजिक इस्थिति में अन्तर हे। ई

सम्बन्ध में अप्पन मार्मिक व्यथा व्यक्त करइत एगो मगध के कन्या कहइत हे :

'जाहि दिन हे अम्मा, भइया के जलमवा,
सोने छूरी कटइले नार हे।
जाहि दिन अहे अम्मा, हमरो जलमवा
हँसुआ खोजइते हे अम्मा, खुरपी न भेंटे,
भिटकी कटइले मोर नार हे।'

एही मनोवेदना व्यक्त करइत एगो मैथिल बेटी कहइत हे :

'हम भइया मिलि एक कोख जनमल,
पियलि सोरहिया के दूध हे।
भइया के लिखइन एही बाबा चउपरिया,
हमरो लिखल परदेस हे।'

दू छेत्तर के अभिव्यक्ति होवे से किंचित भासा-भेद देखाई पड़ऽ हे, बाकी दुनो के मूल धारा एक हे।

दूसर प्रसंग हे—कन्या के विवाह के बाद बिदाई के। बिहार प्रान्त में कन्या के बिदाई के घड़ी सउँसे घर करुना से ओत-प्रोत रहऽ हे। ई संदर्भ में मगध के कन्या कहऽ हे :

'अम्मा के रोवइत गंगा बही गेल, बाबू के रोवइत समुन्दर हे।
भइया के रोवइत भिंजलइ चदरिया, भउजी के अँखिया न लोर हे।'

एही भाव के भोजपुरी कन्या अइसे व्यक्त करऽ हे :

'बाबा के रोवले गंगा बढ़ि आइलि,
अम्मा के रोवले अन्हार ए आहे।
भइया के रोवले चरन धोती भींजे
भउजी नयनवा न लोर।'

मिथिला के बेटी के अभिव्यंजना ई तरह हे :

'बाबाक कनले में सबन लोग कानइ,
अम्माक कनले दहलल भुईं हे।
भइया निरबुधिया के आँगी-टोपी भींजल,
भउजी के हिरदय कठोर हे।।'

करुन रस से सराबोर ई गीत–पंक्ति सब में छेत्तर–भेद से भासा–भेद देखाई दे हे; बाकि सबके आत्मा एक हे, मूल भाव एक हे।

एगो दूसर प्रसंग हे प्रोसित–पतिका नायिका के। पति ही परदेसी बाना में आयल हे आउ पत्नी के सत्य–परिच्छा लेवेला चाहइत हे। मगही में पति–पत्नी के वार्ता ई तरह हे :

पति : **लेहु हे सुन्नर डाल भर सोनमा, मोतियन माँग भरऽ ।**
छोड़ि देहु बिअहुआ के आस, सगहुआ के संग चलऽ ।।

पतिव्रता दुतकारइत जवाब दे हे :

पत्नी : **आगि लगउ डाल भर सोनमा, मोतियन बजरा पड़उ ।**
हमरो सामी लौटतन बनिजिया, घरवा लूटि लउतन ।।

भोजपुरी नायिका के भी पति प्रेम–परिच्छा लेइत हे :

पति : **लेहु ना सुनरी डाल भरि सोनवा, मोती माँग भरी ।**
छोड़ि देहु अइसन बउराह, लगहु मोरा साथे हरी ।।

पतिव्रता ललार के उत्तर दे हे :

पत्नी : **आगि लगइवो तोरा डाल भरि सोना, मोती जरि जाहु ।**
लउटिहें उहे बउराह, लुटइबो तोरी बरधी धनी ।।

अस्थान आउर छेत्तर–भेद से भासा–भेद होना स्वाभाविक हे। कै जगह तो लिखित संकेत में ई भासा सब के बीच अंतर भी देखाई न पड़े, सिर्फ ध्वन्यात्मक भेद से दू भासा के अन्तर पकड़ में आवऽ हे। एकर मूल कारन ई हे कि बिहार के सब्भे भासा एक्के मागधी स्रोत से उद्‌भूत हे।

ई समय बिहार के सारा भासा देवनागरी लिपि में लिखल जा हे, जदपि बिहारी भासा सब के अप्पन लिपि भी चलल आयल हे। जथा—मैथिली लिपि या तिरहुता लिपि, कैथी लिपि आदि। देवनागरी लिपि के परचार–परसार से अन्य लिपि के परयोग गौन पड़ गेल हे।

कहे के अभिप्राय ई हे कि बिहार के सुरम्य उपवन में रंग–बिरंगा पुस्प नियर ओकर भिन्न-भिन्न अंचल के अप्पन–अप्पन भासा–साहित–संस्कीरती सोभायमान हे।

सबके अलग–अलग सौन्दर्य हे, सबके अपन–अपन निराला सुरभि हे, सबके अपन–अपन अनुपम छटा हे; परन्तु हे सब्भे एक्के उपवन 'बिहार' के। बाहर से देखाई पड़ेवाला विभिन्नता ओकर पहचान ला हे। ई विभिन्नता से उनकर पृथकता के भ्रम न होवे के चाही।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. बिहार के चौहदी बतावऽ!
2. मिथिला के गौरव दरसावे वाला कउन हथन?
3. कुँअर सिंह कउन छेत्तर के हलन?
4. उत्तर बिहार आउ दकिखन बिहार के विभाजन कउन नदी करऽ हे?
5. बिहारी संस्कीरती के निर्मान में कै गो अंचल के जोगदान हे?

लिखित :

1. सप्रसंग व्याख्या करऽ :

(क) जे हम जनती पिया, जैबऽ हे बिदेसवा
बाँधती हम रेसम के डोर
रेसम बन्धन्वा पिया टुटिए–फटिए जयतइ,
बाँधती हम अँचरा के कोर।।

(ख) जाहि दिन हे अम्मा, भइया के जलमवा
सोने छूरी कटइले नार हे।
जाहि दिन अहे अम्मा, हमरो जलमवा
हँसुआ खोजइते हे अम्मा, खुरपी न भेंटे,
भिटकी कटइले मोर नार हे।

(ग) अम्मा के रोवइत गंगा बहि गेल,
बाबू के रोवइत समुन्दर हे।
भइया के रोवइत भिंजलइ चदरिया,
भउजी के अँखिया न लोर हे।

2. 'संस्कीरती' के माने समझा के लिखऽ!

3. बिहार के पाँचो अंचल आउ उहाँ के भासा के नाम बतावऽ।

4. विभिन्नता आउ एकता में अंतर बतावऽ।

5. मगही छेत्तर बिहार के कउन–कउन जिला में फैलल हे?

6. साहित आउ संस्कीरती के निर्मान में केकर जोगदान रहऽ हे।

7. फोहवा सिसु के जनम के साथे कउन–कउन उत्सव सुरू हो जाहे?

8. बियाह के मौका पर कउन–कउन कार्जक्रम करल जाहे?

भासा–अध्ययन :

1. नीचे लिखल कउन संग्या हे ?
   पटना, बेटी, मगही, रेसम, संस्कीरती
2. नीचे लिखल सबद से बिसेसन बनावऽ:
   इतिहास, समाज, राजनीति, धर्म, गाँव
3. नीचे लिखल सबद के एक एक पर्यायवाची सबद बतावऽ:
   गंगा, इलाका, विस्व, अनुपम, राजा

योग्यता-विस्तार :

1. 'बिहरी संस्कीरती के पहचान' से मिलइत-जुलइत भाव वाला एगो लेख कहीं से चुन के लावऽ आउ सिच्छक के दिखावऽ।
2. 'बिहारी संस्कीरती के पहचान' पर इस्कूल में एगो गोष्ठी के आयोजन करऽ।

सब्दार्थ :

निरंतर	:	लगातार
विराजमान	:	उपस्थित
फोहवा	:	तुरते के जनमल
विस्वनियंता	:	ईस्वर
मनोवेदना	:	दिल के दरद
सुरम्य	:	सुन्दर
सुरभि	:	सुगन्ध
अनुपम	:	जेकर उपमा न देल जा सके

●